Epitome : International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN : 2395-6968

# हिंदी दलित कविता में मानवीय संवेदना

**प्रा.डॉ.सुभाष ना.क्षीरसागर**
हिंदी विभाग प्रमुख
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय
बसमतनगर जि.हिंगोली.

## ABSTRACT

हिदी दलित काव्य आंदोलन के संदर्भ में विद्वानों मे मतभिन्नता है | तथागत गौतम बुध्द ने जिस समतामुलक चिंतनधारा का बीजवपन किया वही चिंतनधारा कबीर, महात्मा फुले एवं दलितों के मसिहा डॉ. बाबाबसाहेब अम्बेडकर जैसे परिवर्तनवादी चिंतको के कारण वर्तमान युग में फल फुल रही है | इसी चिंतन के तहत जो साहित्य लिखा गया, वह दलित साहित्य के रुप में जाना जाता है| दलितो के प्रति केवल साहानुभूती प्रकट करना इस साहित्य का उद्देश नही बल्की दलित जीवन को पीडा और वेदना से मुक्त कराने के लिए उन्हे जागृत करना इस साहित्य का उद्देश है | दलित वर्ग का पक्षघर बनकर उनके जीवन को स्पष्ट रुप से चित्रित करने का काम दलित रनाकार ही कर सकता है | इस संदर्भ में डॉ.पाण्डेय का कथन है, “सच्चा दलित साहित्य वही है, जो दलितों के बारे में स्वयं दलित लिखेगें | जब अपने समूदाय के जीवन के यथार्थ अनुभवो के बारे में कोई दलित लिखता है, तब उसकी दृष्टी में जो आग, भाषा में जो ताकत, भावों में जो आक्रोश,विद्रोह होता है, वह गैर दलितों द्वारा दलितो के बारे में लिखे गए साहित्य में नहीं होता |”

 ©EIJMR All rights reserved.